



### कलम के सिपाही के जीवन सत्य में प्रतिबिम्बित रचना—धर्मिता का

#### अनुभूत—सत्य

डॉ. किरण ग्रोवर

एसो. प्रो. स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, डी.ए. वी. कॉलेज अबोहर।

चलभाष— 94783—20028

groverkirank@gmail.com

kirangrover@davcollegeabohar.com

**सारांश:**— सच्चे साहित्यकार का व्यक्तित्व एवम् कृतित्व आदर्शों की अनुकूल दिशा में चलता है। साहित्यकार की वेदना बेचैनी का रूप धारण कर अनुभूत सत्य को साहित्य में चित्रित करती है। कलम के सिपाही मुंशी प्रेमचन्द जी की महान् रचनाएं उनके जीवन दर्शन को अनुप्राणित करती हैं व मानवतावादी विचारों से सराबोर होने के कारण वर्तमान युग को भी प्रभावित करती हैं। प्रेमचन्द के जीवन व रचनादर्शों में असंगति नहीं थी इसीलिए उनके व्यक्तित्व एवम् कृतित्व में युगीन समाज अपनी तमाम असंगतियों, आन्दोलनों, एवम् प्रगतिकामी नवीनताओं के साथ समाहित हुआ है। अपरिग्रही व्यक्तित्व की झलक प्रेमचन्द जी के जीवन की विविध घटनाओं से मिलती है। लोक मानस के सच्चे पारखी प्रेमचन्द जी ने मातृवंचित आपबीती, अभावग्रस्तता, व्यवधानों का उल्लेख करके विधवाओं, वेश्याओं की दुरावस्था के प्रति अपनी रचनाओं यथा सेवासदन, प्रेमाश्रम, कर्मभूमि, गोदान, कायाकल्प, निर्मला आदि में अनथक प्रयास किये। प्रेमचन्द जी का महामानवत्व होरी किसान की सहानुभूति में प्रतिबिम्बित हुआ। उनकी सहज अनुभवगम्यता व सरल व्यावहारिकता प्रेमचन्द दर्शन की विशिष्टता है। उनकी रचना धर्मिता का ऐतिहासिक महत्त्व यह है कि उन्होंने भारतीय साहित्य के इतिहास को नूतन मोड़ पर अवस्थित किया। जीवन्त पात्रों की रचना करना प्रेमचन्द जी की कलात्मकता का प्रतिफल है।

**बीज शब्द:**—, मुंशी प्रेमचन्द, कलम के सिपाही, जीवन्त पात्र, रचना धर्मिता, जीवन सत्य।

**मूल प्रतिपादन:**— समस्त कलाकृतियां प्रणेताओं की आत्मिक कुरेदन का साकार रूप होती हैं। रचनाकारों के जीवन परिवेश का उनकी धारणाओं व जीवन दर्शन के निर्माण में अप्रतिम योगदान रहता है। इस सन्दर्भ में मुंशी प्रेमचन्द जी के उद्गार अवलोकनीय हैं—“ साहित्यकार या कलाकार स्वभावतः प्रगतिशील होता है अगर यह उसका स्वभाव न होता तो शायद वह साहित्यकार ही न होता। उसके अपने अन्दर एक कमी महसूस होती है। इसी कमी को पूरा काने के लिए उसकी आत्मा बेचैन रहती है, अपनी कल्पना में वह व्यक्ति व समाज को जिस



स्वच्छन्दता के साथ देखना चाहता है, वह उसे दिखाई नहीं देता। यही वेदना उसके हृदय व मस्तिष्क को सक्रिय बनाए रखती है। वह वेदना को जिस बेचैनी के साथ अनुभव करता है उतनी ही उसकी रचना में सच्चाई होती है।” यह प्रामाणिक सत्य है कि रचनाकार अपने अनुभूत सत्य को साहित्य में चित्रित करता है इसलिए रचनाकार के साहित्य को समझने के लिए हम उनकी जीवन पृष्ठभूमि में झाँकें जिसने साहित्यकार का भौतिक संसार रचा था। सच्चे साहित्यकार का व्यक्तित्व एवम् कृतित्व आदर्शों की अनुकूल दिशा में चलता है। साहित्य के उद्देश्य पर विचार करते हुए ने लिखा है—“साहित्य में थोड़े से गिने चुने लोगों का मनोरंजन नहीं होना चाहिए। बल्कि साहित्य को उस जनता के आर्थिक, राजनीतिक ढाँचे से नाता जोड़ना चाहिए जो समाज का निर्माण करने की क्षमता रखता है। जो पुरानी व्यवस्था के उत्पीड़न को खत्म करने में लड़ रहा है।” उत्साही आलोचक रचना के साथ न्याय करने के लिए रचना को रचनाकार से विच्छिन्न करके समझना चाहते हैं लेकिन रचना जिस संसार की उपज होती है वह संसार रचना का सन्दर्भ है। इस सन्दर्भ में साहित्यकार का व्यक्तित्व प्रधान महत्त्व रखता है। इस सन्दर्भ के बिना रचना विवेचित नहीं हो सकती। प्रेमचन्द के व्यक्तित्व एवम् कृतित्व में उनके युग का समाज अपनी तमाम असंगतियों, आन्दोलनों, विक्षोभों एवम् प्रगतिकामी नवीनताओं के साथ समाहित हुआ है। मुंशी प्रेमचन्द जी ने कलम का सिपाही बनकर देश की सेवा की; उनकी सहज अनुभवगम्यता व सरल व्यावहारिकता प्रेमचन्द दर्शन की विशिष्टता है। प्रेमचन्द जी का कथन है—साहित्यकार बहुधा अपने देशकाल से प्रभावित होता है। जब कोई लहर देश में उठती है तो साहित्यकार के लिए अविचलित रहना असंभव हो जाता और उसकी विशाल आत्मा अपने देश बन्धुओं के कष्टों से विकल हो उठती है। इस तीव्र विकलता से साहित्यकार रो उठता है पर उसके रूदन में भी व्यापकता विद्यमान होती है। वह स्वदेश का होकर भी सार्वभौमिक रहता है। प्रेमचन्द जी ने अपने देखे भोगे जीवन के चित्र प्रस्तुत किए। उनके जीवन व रचनादर्शों में असंगति नहीं थी जिसका उच्चतम निदर्शन प्रेमचन्द साहित्य के दर्शनार्थ मिलता है:—

अबोधवस्था में प्रेमचन्द जी की मातृ-स्नेह से वंचित हो जाने की कसक और बढ़ गई जब मुंशी जी के पिता ने पुनर्विवाह कर लिया। ‘प्रेरणा’ शीर्षक कहानी में मोहन नामक लड़के की माता का 7वर्ष की अवस्था में देहान्त हो जाने का मार्मिक वर्णन किया है—“बच्चों के प्यार में एक भूख होती है जो दूध, मिठाई, खिलौनों से भी ज्यादा मादक होती है; वह माँ की गोद के सामने संसार की निधि की भी परवाह नहीं करती।” प्रेमचन्द जी ने ‘कर्मभूमि’ उपन्यास में भी मातृवंचित अमरकांत के माध्यम से आपबीती का प्रतिपादन किया है—“जिस बात को वह मना कर देती उसे अद-बदा कर देता। पिता से भी ढीठ हो गया। पिता व पुत्र में स्नेह बंधन न रहा।”



धनपतराय जी का शिक्षा-काल अभावग्रस्तता के साथ-साथ अव्यस्थित भी रहा। उनके पिता का विभिन्न स्थानों पर स्थानांतरण होता रहा। उनका रुझान पढ़ाई की अपेक्षा पतंग उड़ाने व गुल्ली डंडा की ओर अधिक रहा—“मुझे पतंग उड़ाने का बहुत शौक था। मगर पैसे न थे। विजय बहादुर और मैं बाले मियां के मैदान की ओर जाते वहां कनकैयाँ को देखते रहते।” धनपतराय जी की पढ़ाई का क्रम जैसे तैसे जारी रहा किन्तु उनके सामने व्यवधानों के पहाड़ खड़े होते रहे। इस तथ्य की झलक प्रेमचन्द जी की ‘कफन’ कहानी में मिलती है—“पांव में जूते न थे, देह पर कपड़े न थे, महंगाई अलग। दस सेर का जौ था। स्कूल 3.30 बजे छुट्टी मिलती थी।” समुद्र बच्चों के समान धनपतराय जी को रामलीला देखने का बहुत शौक था। वे राम बनने वाले पात्र के प्रति श्रद्धा भाव रखते थे। उनके पास जितने पैसे होते थे, उनको उस लड़के को दे दिया करते थे।

धनपतराय जी को किस्से कहानियां व उपन्यास पढ़ने का बहुत शौक था। उस समय उनकी उम्र कोई तेरह बरस की रही होगी जब वह हिन्दी बिल्कुल न जानते थे—“उर्दू के उपन्यास पढ़ने का उन्माद था। मौलाना शरद, मिर्जा रूसवा, मौलवी महोम्मद अली हरदोई विलासी उस समय के सर्वविदित उपन्यासकार थे। उनकी रचनाएं जहां मिल जाती थी तब स्कूल की याद टल जाती थी और पुस्तक समाप्त करके ही दम लेता था।”

हिन्दी के अनन्य सेवक ने अपने शिक्षा काल में हिन्दी नहीं पढ़ी। उन्होंने इण्टर में अंग्रेजी, दर्शन, फारसी व वर्तमान काल का इतिहास आदि विषय पढ़े तथा बी ए में दर्शन, फारसी व इतिहास आदि विषयों का अध्ययन किया। बस्ती में श्री मन्नन द्विवेदी व गोरखपुर में महावीर प्रसाद पोद्दार के सम्पर्क में आने पर हिन्दी की ओर झुकाव हुआ। 1913 में उन्होंने हिन्दी कहानियां लिखना प्रारम्भ किया तथा हिन्दी लेखकों में विशिष्ट शैलीकार का गौरव अर्जित किया।

धनपतराय जी को विमाता के कारण अपनी पहली पत्नी से सम्बन्ध-विच्छेद के लिए विवश होना पड़ा। विधवाओं की दुरावस्था के प्रति धनपतराय जी के हृदय में दयार्द्रता का भाव विद्यमान था। इसका सक्रिय प्रमाण उन्होंने बाल विधवा शिवरानी देवी से विवाह करके प्रदत्त किया। हरविलास शारदा द्वारा विधवाओं को पति की सम्पत्ति में से अधिकार दिलाने के प्रस्ताव पर बधाई दी—“मैं आपको दिल से बधाई देता हूँ। स्त्रियाँ आपकी हमेशा कृतज्ञ रहेंगी, क्योंकि स्त्री और पुरुष दोनों मिलकर जिस सम्पत्ति को जोड़ते हैं, पति के मर जाने के बाद उन्हीं के गोद के बच्चे उनसे मुंह छिपाते हैं। यह प्रस्ताव जिस दिन पास होगा, करोड़ों महिलाएं आपको हृदय से आशीर्वाद देंगी और आपकी सदैव कृतज्ञ रहेंगी। उन्हीं के साथ मैं भी आपका कृतज्ञ हूँ।”



शिवरानी देवी जी से विवाह के पश्चात् धनपतराय जी गृह कलह के कारण 7-8 वर्ष चैन की सांस न ले सके। इस सन्दर्भ में 'घर जमाई' कहानी में प्रेमचन्द जी के उद्गार मार्मिक बन पड़े हैं—“ बच्चों के लिए बाप एक फालतू की चीज है, एक विलास की वस्तु है। जैसे घोड़े के लिए चने बाबुओं के लिए मोहन भोग लेकिन मां तो बच्चों का सर्वस्व है।”

प्रेमचन्द नाम उनके मित्र मुंशी दया नारायण निगम ने प्रस्तावित किया। प्रेमचन्द जी ने लिखा है—“संकीर्ण हृदय अफसरों का बस चलता तो आज हिन्दुस्तानी साहित्य में प्रेमचन्द वजूद ही न होता। हवा का रुख कौन बदल सकता है? नवाब राय की आत्मा ने प्रेमचन्द का चोला पहन कर जन्म लिया। सुदर्शन जी से उन्होंने परिहास में कहा था—“चार पैसे पास नहीं तो नाम नवाबराय। इस नवाबी से प्रेम भला, जिसमें टंडक भी और सन्तोष भी।”

सादा जीवन उच्च विचार की उक्ति मुंशी प्रेमचन्द जी पर पूर्णतया चरितार्थ होती हैं। पत्नी के प्रति उनके मन में सहघर्मिणी ही नहीं अपितु समानाधिकारिणी की भावना विद्यमान थी। इस सन्दर्भ में शिवरानी देवी जी का कथन उचित प्रतीत होता है—“उनके दिल में स्त्री जाति के प्रति श्रद्धा थी। वे स्त्रियों को पुरुषों से बड़ा समझते थे।” पत्नी के समादर के सम्बन्ध में भी यह कथन उल्लेखनीय है कि वे जब कोई नया वस्त्र पहनते थे तो पत्नी को सलाम किया करते थे—“जिस प्रकार माता अपने बच्चों को खिला पिला कर खुश होती है, उसी प्रकार तुम भी मुझे देखकर खुश होती हो और इसीलिए मैं हमेशा तुम्हें सलाम किया करूंगा।” इस अनुचित सी रीति के बारे में टोके जाने पर कि सलाम तो उम्र, रिश्ते या पदवी में अपने से बड़े से किया जाता है तो प्रेमचन्द जी ने उत्तर दिया था—“ उम्र, रिश्ता या पदवी कोई चीज नहीं मैं तो जब देखता हूँ तुम्हारा हाथ मां का हाथ है इसलिए मैं सलाम करता हूँ।”

मुंशी जी के हंसोड़ होने के कारण उनकी मित्र मण्डली में उनका बम्बूक नाम पड़ने का भी उल्लेख मिलता है। समयानुकूल हास्य व्यंग्यमय चुटकुले सुनाने में प्रेमचन्द पटु थे। लाहौर के हजारा होटल को वे लाखा होटल बताते हुए चटकारे लेते रहे।

अपरिग्रही व्यक्तित्व की झलक प्रेमचन्द जी के जीवन की विविध घटनाओं से मिलती है। प्रेमचन्द जी की ईश्वर विषयक अनास्था का मूल कारण समाज में चतुर्दिक रोग-शोक, दुख-दैन्य की अतिव्याप्ति थी। उन्होंने डॉ. इन्द्र नाथ मदान जी को लिखा था—“परन्तु अब यह विश्वास टूट गया है। इसमें सन्देह नहीं कि इस विश्व के पीछे कोई बड़ी शक्ति है परन्तु मानव जाति के व्यवहार से उसका कोई भी सम्बन्ध है, इसे मैं नहीं मानता उसी प्रकार जैसे उसको चींटियों, मक्खियों, मच्छरों के झमेलों से कुछ लेना देना नहीं।” उन्होंने जैनेन्द्र जी को पत्र में लिखा था—“जैनेन्द्र मैं कह चुका हूँ मैं परमात्मा तक नहीं पहुँच सकता। मैं इतना



विश्वास नहीं कर सकता। कैसे विश्वास करूँ? जब देखता हूँ कि बच्चा बिलख रहा है, रोगी तड़प रहा है, यहां भूख है, कलेश है ताप है, इस दुनिया में ताप कम नहीं है।” प्रेमचन्द जी के व्यक्तित्व एवम् कृतित्व में धार्मिक आडम्बरों के प्रति विरक्ति, व्यंग्य का स्वर मिलता है। उसके मूल में निस्सन्देह उनके पैतृक संस्कार ही कार्यरत हैं।

प्रेमचन्द जी का महामानवत्व मानव हृदय की शक्ति प्रदर्शन में ही नहीं अपितु पाशविक वृत्ति वालों के मानस में भी ममता की डोर बांधने में समर्थ हुआ। प्रेमचन्द जी के ‘गोदान’ उपन्यास की पात्र मालती अपने बचाव के लिए सबको फटकारती है—“आप लोग इतने कायर हैं यह मैं न समझती थी।” प्रेमचन्द जी ने होरी किसान की सहानुभूति को प्रकट किया है—“उसने झपट कर खान की कमर पकड़ी ऐसा अड़ंगा मारा कि खान चारों खाने चित ज़मीन पर आ रहे।”

उनकी रचना धर्मिता का ऐतिहासिक महत्त्व यह है कि उन्होंने उच्च वर्ग के शिक्षित जनों के लिए नहीं अपितु पात्र जन जीवन से चुन कर समस्त साहित्य भारतीय जनता के लिए रचा व भारतीय साहित्य के इतिहास को नूतन मोड़ पर अवस्थित किया। उन्होंने पात्र जन जीवन से चुने। उन्होंने साहित्य उच्च वर्ग के शिक्षित जनों के लिए नहीं समस्त भारतीय जनता के लिए रचा। अमृत लाल नागर जी ने लिखा है—“साहित्य के नायक—नायिकाओं की लम्बी विरासत वाले तख्ते ताउस पर होरी, घीसू, हल्कू, धनिया, सलोनी आदि प्रेमचन्द के दम पर बेझिझक बड़ी शान से बैठे तथा जमाने का सिर श्रद्धा से नत हो गया।”

जीवन्त पात्रों की रचना करना प्रेमचन्द जी की संवेदना, पर्यवेक्षण शक्ति, कलात्मक उत्कृष्टता का प्रतिफल है। लोक मानस के सच्चे पारखी प्रेमचन्द जी ने विभिन्न वर्गों के व्यवहार का भेद चित्रित करके उनकी संस्कृति की भिन्नता को प्रकट किया। सोद्देश्य रचना के समर्थक होने के नाते प्रेमचन्द जी ने मानव मन के राक्षसत्व के भावों को प्रसुप्त कर तथा प्रसुप्त देवत्व को जागृत किया। युग स्रष्टा प्रेमचन्द जी ने यथार्थ के बहाव को पकड़ कर वर्गों का भेद, वर्ग—संघर्ष, धर्म, संस्कृति, उनका भिन्न दृष्टिकोण, उनके आचार—व्यवहार की भिन्नता, उनकी शूरता व कायरता आदि गुणों को सूक्ष्म दृष्टि से देखा व परखा व उनका साहित्य में प्रतिपादन भी किया। प्रेमचन्द जी के ‘कर्मभूमि’ उपन्यास का पात्र अमरकांत पिता के धार्मिक आडम्बरों पर विश्वास न करके मानव सेवा को ही धर्म मानता है। वह पिता के तानों से तंग आ कर सिर पर खादी का खट्ठर उठाकर बेचता है। ‘प्रेमाश्रम’ उपन्यास के पात्र प्रेमशंकर की उदारता, स्वदेश—प्रेम, निःस्वार्थ—सेवा को देखकर डिप्टी ज्वाला सिंह का मन भारतीय संस्कार में रमने लगता है। वह परोपकार के बल पर प्रतिष्ठा, सम्मान आदि पाकर कौंसिल के चुनाव भी जीत जाता है। प्रेमचन्द जी ने ज्वाला सिंह के बारे में लिखा है—“अंग्रेजों से मिलने जाते



तो टोपी हाथ में ले लेते। जूते उतारने के अपमान से बच जाते हैं। रेलगाड़ी में अंग्रेजों के साथ ही बैठते थे। हिन्दुस्तानी समझना उन्हें गाली देना था। “सेवासदन” उपन्यास में दर्शाया है कि रामनवमी के दिन भोली नाम की वेश्या को मंदिर में आमंत्रित किया जाता है। ‘कर्मभूमि’ की पठानिन अपनी लड़की सकीना की शादी के बारे में अमरकांत से पूछती है—“हमारे नबी का हुक्म है कि शादी ब्याह में अमीर गरीब का ख्याल न होना चाहिए। नाम के हिन्दू, नाम के मुसलमान रह गये हैं। न कहीं सच्चा मुसलमान नज़र आता है न सच्चा हिन्दू।” ‘कायाकल्प’ उपन्यास के शिक्षित पात्र चक्रधर को दहेज न लेने देने के प्रश्न पर माता निर्मला के विरुद्ध खड़ा किया है—“तो बाज़ार में खड़ा कर बेच क्यों नहीं देती देखो कै चके मिलते हैं ?” प्रेमचन्द रचना संसार के अनेक पात्रों ‘गोदान’ में रुद्रपाल-सरोज, ‘सेवासदन’ में सदन सिंह-शांता, ‘निर्मला’ में कृष्णा-सुधा आदि का दहेज रहित विवाह करवा कर देश के भावी नवयुवकों को दहेज समस्या के समूल नष्ट करने की प्रेरणा दी है।

व्यक्तित्व की सादगी के कारण दिल्ली में आयोजित हिन्दी साहित्य सम्मेलन के अधिवेशन में वालंटियरों ने मुंशी जी को मंच पर जाने से रोक दिया। प्रेमचन्द जी के सम्मान में इमित्याज अली ताज ने लाहौर में भव्य आयोजन किया जिसमें प्रेमचन्द जी चन्द्रगुप्त विद्यालंकार जी के साथ पहुंचे। वहां की चकाचौंध देखकर उन्हें गलत स्थान पर पहुंचने का सन्देह हुआ। वहां गेट पर खड़े सिपाहियों को यह अनुमान भी न हो सका कि प्रस्तुत आयोजन इस साधारण से देहाती के सम्मान में किया जा रहा है।

प्रेमचन्द की दृष्टि में ‘हंस’ पत्रिका के प्रकाशन का मूलोद्देश्य धनार्जन न होकर साहित्य की सेवा करना था। वे निश्छल प्रकृति के जीव थे। शिवरानी जी ने ‘हंस’ पत्रिका के सम्बन्ध में मीठी चुटकी ली थी—“तुम्हारा यह हंस बड़े मोती उगलता है।” शिवरानी जी का अभिप्राय स्पष्ट करते हुए उनका व्यंग्यमय उत्तर था—“हंस मोती उगला नहीं चुगा करते हैं।” बम्बई से लौटने पर प्रेमचन्द जी का स्वास्थ्य अन्नु दिन गिरता ही गया। प्रैस का घाटा प्रेमचन्द जी को घुन की तरह खाये जा रहा था। उन्होंने शिवरानी देवी जी से कहा—

रानी हंस जरूर निकलेगा मैं रहूँ या न रहूँ।

प्रगतिशील लेखक संघ के प्रथम अधिवेशन में प्रेमचन्द जी ने सभापतित्व स्वीकार करके सारगर्भित वक्तव्य देकर लेखकों का मार्गदर्शन किया। मैक्सिम गोर्की के देहावसान पर प्रेमचन्द जी ने आयोजित गोष्ठी में अधीर होकर श्रद्धांजलि भेंट की। प्रेमचन्द जी का जलोदर रोग अन्ततः प्राणघातक सिद्ध हुआ। 8 अक्टूबर 1936 की प्रातःकाल नश्वर शरीर को त्याग कर



यशः शेष हो गये। हां, उनके कृती व्यक्तित्व पर लम्बे समय तक काल के दाग नहीं लग पाएंगे—

जयन्ति ते सुकृतिनो रससिद्धा कवीश्वराः

नास्ति येषां यशः कायो जरामरणज भयम्।

### सन्दर्भ ग्रन्थः—

- 1 राम विलास शर्मा— प्रेमचन्द और उनका युग।
- 2 इन्द्रनाथ मदान— प्रेमचन्द एक विवेचन।
- 3 शिवरानी देवी— प्रेमचन्द घर में।
- 4 मन्मथ नाथ गुप्त—कलाकार प्रेमचन्द।
- 5 राजेश्वर—प्रेमचन्द एक अध्ययन।
- 6 राजपाल शर्मा— गोदान पुनर्मूल्यांकन।
- 5 मुंशी प्रेमचन्द—सेवासदन
- 6 मुंशी प्रेमचन्द—प्रेमाश्रम
- 7 मुंशी प्रेमचन्द—‘कर्मभूमि’
- 8 मुंशी प्रेमचन्द—गोदान
- 9 मुंशी प्रेमचन्द—“कायाकल्प”
- 10 मुंशी प्रेमचन्द—निर्मला
- 11 मुंशी प्रेमचन्द—मानसरोवर खण्ड 1,2,3,4,

### Net Sources :-

- 1 [www.thefamouspeople.com/profiles/munshi-premchand-101.php](http://www.thefamouspeople.com/profiles/munshi-premchand-101.php)
- 2 [pib.nic.in/feature/feyr2001/fjul2001/f190720011.html](http://pib.nic.in/feature/feyr2001/fjul2001/f190720011.html)
- 3 [www.imdb.com/name/nm0695919/bio](http://www.imdb.com/name/nm0695919/bio)